(10)

श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान परिचय

Answer - Sheet

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर ______ 10 शहर ______

विद्यार्थी का नाम ______

प्रश्न-१ रिक्त स्थान		प्रश्न-२ एक ही शब्द में				प्रश्न-५ संख्या में जवाब	
				(५)	प्रबल		
(१)	दुष्कृतो	(१)	प्रभासस्वामी	(६)	सुवर्णमय	(१)	४४००
(२)	रौद्रध्यानी	(२)	निन्हव	(७)	अंतराय	(२)	६
(३)	अभ्यागत	(३)	परलोकाशंसा प्रयोग	(८)	अल्प	(३)	४
(४)	उपशांत मोह	(४)	गुणरागी (गुणानुरागी)	(९)	एकमात्र	(४)	१०
(५)	देहरहित	(५)	उपसर्गों	(१०)	प्रद्वेष	(५)	१०३
(६)	पदार्थ	(६)	समयक्षेत्र	(११)	स्मशानभूमि	(६)	४० वर्ष
(७)	जीवीताशंसा प्रयोग	(७)	कालातिक्रम	(१२)	विपरीत	(७)	१५८
(८)	अग्निहोत्र	(८)	सद्गति	(१३)	जिनके जन्म मरण	(८)	१२११ योजन
(९)	नीचगोत्र	(९)	तिर्यंच गति	(१४)	प्रमाद	(९)	~~१५८~~ १६०
(१०)	साधक आत्मा	(१०)	तद्भव मोक्षगामी	(१५)	ऊंचे	(१०)	८ वर्ष
(११)	कषाय विजय	(११)	औदारिक	(१६)	मुखवास		
(१२)	परमपद	(१२)	व्रतधारी, श्रावक	(१७)	मूल		
(१३)	स्वर्णमय	(१३)	शंका	(१८)	विपाक		
(१४)	अशाता वेदनीय	(१४)	दृढधर्मी	(१९)	प्राणीओं के		
(१५)	आत्म निर्मलता	(१५)	वैडूर्यरत्नमय	(२०)	पूर्व		
(१६)	तद्भव मोक्षगामी						
(१७)	उपधान						
(१८)	नाश						
(१९)	सागारी अनशन						
(२०)	देवायु						

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	मेरुपर्वत
(२)	मोक्ष
(३)	प्ररूपित
(४)	निरहंकारी

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	४	(६)	९
(२)	७	(७)	१
(३)	८	(८)	२
(४)	५	(९)	३
(५)	१०	(१०)	६

प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर	
(१)	×	(१)	५
(२)	×	(२)	१०
(३)	✓	(३)	१७
(४)	✓	(४)	९
(५)	×	(५)	४
(६)	✓	(६)	१५
(७)	×	(७)	१९
(८)	✓	(८)	७
(९)	✓	(९)	१६
(१०)	×	(१०)	५

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ______ जांचनेवाले की सही ______

प्रश्न - ८

१. दर्शन मोहनीय कर्म किन कारणों से बंधता है → उन्मार्ग का उपदेश, सन्मार्ग का नाश देवद्रव्य का हरण, वगैरह से जिनेश्वर प्रभु - मुनिराज, चैत्य और श्रीसंघ के प्रत्यनीक विरोधी दर्शन मोहनीय कर्म बांधते हैं।

① उन्मार्ग - गलत पापके मार्ग को दिखाना ② मार्गनाश - शुद्ध मोक्षमार्ग का नाशकरना अथवा लुप्त करना ③ देवद्रव्यहरण - देवद्रव्य का हरणकरना, भक्षण करना ④ प्रत्यनीक - तीर्थंकर साधु, चैत्यप्रतिमा, चतुर्विध संघ के प्रति अनिष्ट आचरण इन सभी हेतुओं से जीव मुक्त बने।

२. अतिथि संविभाग व्रत किस तरह किया जाता है → श्रावक को अपने घर अतिथि आया देखकर रोमांचपूर्वक, अपूर्व आनंद सहित, स्वयं को बड़ा भाग्यशाली समझकर उस अतिथि को न्यायोपार्जित द्रव्य से लाया हुआ और प्रसंग आदि दोष से रहित साधु के लिये नही पर स्वयं के लिये बनाया हुआ ऐसा निर्दोष अन्न पानी रूप द्रव्य उसका देशकाल के अनुमान से, श्रद्धा सत्कार आदि क्रमयुक्त, पश्चात कर्मादि दोषरहित बड़ी भक्तिपूर्वक अपनी आत्मा को अनुग्रह बुद्धि से "संजय (साधु)" यानि संयति के लिए अन्न-पानी रूप द्रव्य का विभाग करना यानि उस संविभागीत अन्न का यति को दान देना।

३. श्री प्रभास स्वामी की शंका का समाधान प्रभु ने किस तरह किया → इस वेदवाक्य से तुझे मोक्ष का अभाव दिख रहा है। जो अग्निहोत्र है वो जरामर्य है, यानि आजीवन अग्निहोत्र करना चाहिये। यानी जो मानव जिंदगी के अंत तक अग्निहोत्र करता है उसे मोक्षफल देनेवाली क्रिया करने का अवसर रहता नहीं है, अग्निहोत्र क्रिया मे कितनेक जीवों का वध होता है और कितनेक पर अमुक तरह का उपकार भी होता है इसलिये स्वर्ग हो सकता है पर मोक्ष हो सकता नही ऐसी तेरी समझ बराबर नही है। जो कोई स्वर्ग का ही अर्थी है उसे जीवनपर्यंत अग्निहोत्र करना चाहिये। परंतु जो मोक्षार्थी हो उसे अग्निहोत्र तजकर मोक्ष दिलवानेवाले अनुष्ठानों में ही ओतप्रोत बन मोक्ष साधना चाहिये।

४. निद्राधीन होने से पूर्व श्रावक के क्या कर्तव्य है और क्यों करना चाहिये → ① जीवराशी खमाना ② अट्ठारह पापस्थानक की आलोचना लेना ③ दुष्कृत्य की निंदा करना ④ सुकृत की अनुमोदना करना ⑤ चार शरणों का स्वीकार करना ⑥ सागारी अनशन का स्वीकार।

जीवन क्षणभंगुर है, आज सबके बीच सुख से बैठा हुआ व्यक्ति कब काल का ग्रास बन जायेगा इसका पता नही लगता, ऐसे समय मे सच्चे साधक श्रावक ने सतत सावधान रहना आवश्यक है। अंततः तो जैसी मति वैसी गति होती है।

५. संलेषणा के अतिचार कौनसे है, किसी दो को बतलाइये → संलेषणा के पांच अतिचार है ① इहलोग - संसप्पओगे ② परलोक संसप्पओगे ③ जीवीआसंसप्पओगे ④ मरणासंसप्पओगे ⑤ कामभोगासंसप्पओगे

① इस धर्म के प्रभाव से मैं इहलोक यानि यही मनुष्य भव पाकर के, सेठ, सेनापति, राजा, मंत्री वगैरह की रिद्धि पाउं, ऐसी अभिलाषा इच्छा उसका प्रयोग यानि मन का व्यापार करे वो इहलोकाशंसा प्रयोग नामक अतिचार है।

② इस धर्म के प्रभाव से परलोक की बाबत मे मै परभव मे इन्द्र बनु अथवा चक्रवर्ती की पदवी पाउं ऐसी अभिलाषा का मन का व्यापार करना, वो दुसरा परलोकाशंसा प्रयोग नाम का अतिचार है।